Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor
Deptt of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper - IV
Date:-
Do-Next-class

Gestalt Psychology:

Contribution of the Field of Learning

(4) स्मृति (Memory) :- गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्मृति (Memory) के क्षेत्र में प्रत्यक्षण के नियमों (Principles) का उपयोग किया गया है। उस समय स्मृति का एक प्रचलित सिद्धान्त यह था कि जब व्यक्ति किसी वस्तु या चीज का प्रत्यक्षण करता है और बाद में उसका प्रत्याहन (recall) करता है, और यदि इसमें उससे सफलता मिलती है, तो इसका प्रमुख कारण यह कि उस उद्दीपक का मस्तिष्क में एक चिन्ह (trace) रह जाता है। जब यह चिन्ह मिट जाता है, तो व्यक्ति उस चीज का प्रत्याहन (recall) नहीं कर पाता है। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस सिद्धांत को अस्वीकृत कर दिया गया हालांकि इन लोगों ने चिन्ह (trace) के संप्रत्य को काफी लाभदायक बताया गया। इन लोगों का मत है कि स्मृति एक गत्यात्मक प्रक्रिया (dynamic process) होती है जिसमें समय बीतने के साथ-साथ चिन्हों में कई तरह के क्रमिक परिवर्तन प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम (principle of perceptual organization) के अनुरूप होते हैं। उदाहरण के रूप में प्रेगनेंज के नियम (Principle of Pragnanz) को ले सकते हैं। वुल्फ (Wulf, 1922) ने अपने प्रयोग में इसे और स्पष्ट किया है। इन्होंने अपने प्रयोगों में प्रयोज्यों को कुछ साधारण अनियमित ज्यामीतिय चित्र को पाँच सेकण्ड के लिए दिखाया। इसके बाद विभिन्न समय अंतरालों से 30 सेकेंड, 24 घंटे तथा एक सप्ताह के बाद उन आकृतियों या चित्रों को रेखांकित करने के लिए कहा

Ajanta Products Oxford
Scanned with CamScanner

गया। परिणाम में देखा गया कि प्रयोज्य अस्पष्ट आकृतियों को स्पष्ट करके तथा उसके एक उत्तम प्रारूप देकर रेखांकित किए। गेस्टाल्ट के इस सिद्धांत का कुछ प्रयोगात्मक समर्थन अन्य लोगों से भी प्राप्त था। गिब्सन (Gibson, 1929) बार्टलेट (Bartlett, 1932) एवं आलपोर्ट तथा पोस्टमैन (Allport & Postman, 1947) ने भी अपने प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया था कि प्रयोज्य धीरे-धीरे मौलिक सामग्रियों को अधिक स्पष्ट करते हैं और इस तरह से अपने प्रत्याहन या पुनरुत्पादन (reproduction) में वे विकृति (distortion) उत्पन्न अवश्य कर देते हैं। लेकिन इस विकृति का स्वरूप उत्तम (good) होता है। इन प्रयोगात्मक सबूतों से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्मृति की व्याख्या प्रत्यक्षज्ञानात्मक संगठन के नियम (principle of perceptual organization) द्वारा संभव है।

End.